नैषधचरित में सप्तद्वीपों का वर्णन

डॉ. निशा
एम. फिल., पी–एच.डी. (संस्कृत)

नैषधचरित संस्कृत साहित्य का एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। नैषधचरित को नैषधं विद्वदौषधम् अर्थात् विद्वानों की औषधि कहा गया है। आलोचकों ने इस महाकाव्य की सर्वश्रेष्ठता के लिए और भी कहा है कि

तावद्भाः भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।।

नैषधचरित में विभिन्न प्रकार के विषयों का वर्णन प्राप्त होता है। इन्हीं विषयों में प्रमुख विषय सप्तद्वीप का है जिसे भुवन विज्ञान कहते हैं।

द्वीप का अभिधेयार्थ

चारों ओर से समुद्र से घिरा हुआ कोई प्रदेश या भू–भाग द्वीप कहलाता है।[1] शिशुपालवध महाकाव्य में समुद्र–द्वीपवासी व्यापारियों का उल्लेख किया गया है।[2] द्वीप के हजारों भेद हैं, परन्तु वे सभी सात प्रधान द्वीपों के अन्तर्गत आ जाते हैं।[3] महाभारत में परशुराम द्वारा अट्ठारह द्वीपों को अपने वश में करने का उल्लेख किया गया है।[4] नैषधचरित में भी एक स्थल पर अट्ठारह द्वीपों का उल्लेख किया गया है[5] और अनेक स्थलों पर द्वीप शब्द का नामोल्लेख किया गया है।[6]

महाभारतानुसार परशुराम ने सात द्वीपों से युक्त यह पृथ्वी ब्रह्मर्षि कश्यप को दान में दी थी।[7] पुराणानुसार पृथ्वी सात द्वीपों से युक्त है। इनमें बहुत सी नदियाँ और पर्वत भी है तथा यह सात समुद्रों से सभी ओर से विभूषित होती है।[8] कादम्बरी में भी पृथ्वी को सप्तद्वीप वाली बतलाया गया है।[9] इनमें जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौञ्च, शाक और पुष्कर ये सातों द्वीप क्षार जल, इक्षुरस, मदिरा, घी, दधि, दूध और स्वादू जल के सात समुद्रों द्वारा चारों ओर से घिरे हुए हैं।[10] ऐसा कहा जाता है कि प्रियव्रत ने कर्दम की कन्या से विवाह किया और उससे सम्राट तथा कुक्षि नाम की दो कन्याएँ एवं दश पुत्र पैदा किए।[11] उन दशों में से सात के नाम आग्नीध्र, मेधातिथि, वपुष्मान्, ज्योतिष्मान्, द्युतिमान्, भव्य और सवन थे तथा अन्तिम तीन मेधा, अग्निबाहु और मित्र जन्म से ही यागपरायण हुए। उन सातों को राजा प्रियव्रत ने सात द्वीपों का राज्य प्रदान किया, जहाँ ये सब धर्मपूर्वक राज्य करने लगे।[12]

जम्बूद्वीप

नैषध के उल्लेखानुसार दमयन्ती के विवाहेच्छुक जम्बूद्वीप के समस्त तरुण सभा में आए थे। उस समय दमयन्ती जम्बूद्वीप का अभिमान प्रतीत हो रही थी।[13]

लिंग पुराणानुसार सुन्दर और महाबल वाले आग्नीध्र को प्रियव्रत ने जम्बूद्वीप का राजा बनाया।[14] ऐसा कहा जाता है कि जम्बूद्वीप एक लक्ष योजन विस्तार वाला है और चारों ओर से एक लक्ष योजन के मानवाले क्षारसमुद्र से आवृत्त है।[15] एक मत के अनुसार जम्बूद्वीप समस्त द्वीपों के मध्य में अवस्थित है और उसके मध्य में स्वर्णमय सुमेरु पर्वत विराजमान है। इस द्वीप में जम्बू (जामुन) का पेड़ है। इसलिए इस द्वीप का नाम जम्बूद्वीप पड़ा। जम्बूवृक्ष के फल बड़े–बड़े हाथियों के समान होते हैं और जब वे फल पर्वत पर गिरते हैं तब फटकर उनका रस सर्वत्र फैल जाता है। उस रस से जम्बू नाम की नदी निकलती है।[16] श्रीहर्ष वर्णन करते हैं कि जम्बूद्वीप सब द्वीपों से घिरा हुआ है और यह द्वीप सुमेरु रूपी कनकदण्डरूप छत्र तथा कैलास के किरण–समूहरूप चामर के चिह्न से युक्त होने से सब द्वीपों के स्वामी की तरह शोभायमान होता है। जामुन के फलो के रस के बहने से उत्पन्न हुई तथा अमृततुल्य मधुर जलवाली 'जम्बूनदी' इस जम्बूद्वीप की सीमा में बहती है, जम्बूनदी की मिट्टी को जाम्बूनद अर्थात् सुवर्ण (सोना) कहा गया है।[17]

प्लक्षद्वीप

एक मत के अनुसार प्लक्षद्वीप के राजा का नाम मेधातिथि है।[18] प्लक्षद्वीप में अनुतप्ता, शिखी, विपाशा, त्रिदिवा, अक्लमा, अमृता और सुकृता–ये सात नदियाँ बहती हैं।[19] यहाँ आर्यक, कुरर, विदिश्य और भावी नाम की जातियाँ ही क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहलाती है।[20] इनके द्वारा सोम (चन्द्र) की पूजा की जाती है। यह द्वीप इक्षुरसोद नाम वाले सागर से आवृत्त है।[21] यहाँ जम्बूवृक्ष के परिमाण वाला एक प्लक्ष (पाकर) वृक्ष है। इसके नाम से ही इस द्वीप का नाम प्लक्षद्वीप पड़ा।[22] श्रीहर्ष के अनुसार राजा 'मेधातिथि' 'प्लक्ष' वृक्ष से युक्त द्वीप अर्थात् प्लक्षद्वीप का शासन करता है। उस प्लक्षद्वीप में बहुत बड़ा 'प्लक्षवृक्ष' है जो छतनार होने से पृथ्वीमण्डल के छाते के समान जान पड़ता है। प्लक्षद्वीप की जनता वहाँ प्रियक्रीड़ा करती है। वह महावृक्ष की शाखाओं में झूला झूलते हैं। उस द्वीप में इक्षुरस का समुद्र है। वहाँ लोग चन्द्रमा को देखे बिना भोजन नहीं करते अर्थात् वे चन्द्रमा की पूजा करते हैं। प्लक्षद्वीप में विपाशा नामक नदी बहती है। यह नदी घटती बढ़ती नहीं है और इस नदी में कमल प्रचुर मात्रा में होते हैं।[23]

शाल्मलिद्वीप

एक मत के अनुसार शाल्मलिद्वीप के राजा का नाम वपुष्मान् है।[24] ऐसा कहा जाता है कि इस द्वीप में कुमुद, अनल, बलाहक, द्रोण, कङ्क, महिष और कुकुद्मान् – ये सात पर्वत हैं।[25] यहाँ एक शाल्मलि (सेमल) का विशाल वृक्ष है, जो अपने नाम से ही शान्तिदायक है[26] यह द्वीप सुरासागर से आवृत्त है।[27] श्रीहर्ष वर्णन करते हैं कि मदिराख्य जल वाले समुद्र से घिरे हुए 'शाल्मलि' द्वीप के स्वामी का नाम

वपुष्मान् है। वपुष्मान् को गुणों का समुद्र कहा गया है।[28] शाल्मलिद्वीप में द्रोण नामक पर्वत है जो अनेक प्रकार की संजीवनी आदि औषधियों से युक्त है। औषधियों के प्रकाश से वह पर्वत ऐसा लगता है कि उस द्वीप का दीपक हो जिसकी चोटियों (शिखरों) पर घिरे बादल दीपक से निकले काजल – से लगते हैं।[29] शाल्मलिद्वीप में शाल्मलि (सेमल) नामक वृक्ष है जो उस द्वीप का चिह्न है। वायु द्वारा सेमल के पेड़ की कपास उड़ायी जाती है और वह कपास भूतल पर बिछ जाती है। यह सुन्दर तो प्रतीत होती ही है साथ में इससे भूतल भी कोमल हो जाता है।[30]

कुशद्वीप

कुशद्वीप के राजा का नाम ज्योतिष्मान् है।[31] कुशद्वीप में विद्रुम, हेमशैल, द्युतिमान्, पुष्पवान्, कुशेशय, हरि और मन्दराचल – ये सात पर्वत हैं।[32] कुशद्वीप में कुश का एक झाड़ (स्तम्ब) है, उसी के नाम पर इस द्वीप का नाम कुशद्वीप पड़ा।[33] एक मत के अनुसार यह द्वीप घृत के उदधि (सागर) से वेष्टित है और क्रौञ्चद्वीप से भी आवृत्त है।[34] श्रीहर्ष उल्लेख करते हैं कि कुशा से चिन्हित देह वाले कुशद्वीप का स्वामी ज्योतिष्मान् है। उस द्वीप में घृतोद समुद्र है और समुद्र तटों पर सघन वन है।[35] कुशद्वीप को देखकर आश्चर्य होता है। वह द्वीप इतने ऊँचे–ऊँचे कुशों के झाडों से घिरा है कि उनकी नुकीली कृपाण तुल्य कोरें बादलों में चुभ जाती है और मेघमण्डल से टपकता जल निरन्तर कुश स्तम्बों को सींचता रहता है। इस तरह कुश को सिंचने की स्वचालित प्रणाली कुशद्वीप में देखने को मिलती है।[36] कुशद्वीप में मन्दराचल पर्वत की गुफाएँ हं जो समुद्रमन्थन–काल में समुद्र पुत्री लक्ष्मी के चरणों से पवित्र हो गयी थी।[37]

कौञ्चद्वीप

एक मत के अनुसार क्रौञ्चद्वीप के नरेश का नाम द्युतिमान् है।[38] क्रौञ्चद्वीप में क्रौञ्च, वामन, अन्धकारक, देवावृत, महाशैल, दुन्दुभि और पुण्डरीकवान् नामक पर्वत है।[39] क्रौञ्चद्वीप में पुष्कर, पुष्कल, धन्या और तिष्य नामक चार वर्ण निवास करते हैं जो क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र है।[40] वास्तव में ये जातियाँ वहाँ हरि का भजन करती हैं। क्रौञ्चद्वीप दधिमण्ड उदक से आवृत्त होता है। यह शाकद्वीप से भी घिरा हुआ है।[41] श्रीहर्ष वर्णन करते हैं कि क्राञ्चद्वीप के अधिपति का नाम द्युतिमान् है जिसके देश में मण्डलाकार दधिमण्डल जलवाला समुद्र शोभायमान है।[42] क्रौञ्चद्वीप में क्रौञ्च नामक पर्वत है। कार्तिकेय ने क्रौञ्च पर्वत में अपने बाणों द्वारा छेद किया था। उन छिद्रों से हंसों के कलरव की ध्वनि सुनाई देती है।[43] क्रौञ्चद्वीप में चन्द्रशेखर (शङ्कर जी) की पूजा होती है, क्योंकि उस देश के लोगों के लिए वही एकमात्र देवता है। वहाँ शङ्करार्चन का इतना महात्म्य है कि

मात्र कुशपत्रों से चन्द्रमौलि का पूजन करके मनुष्य मुक्ति को प्राप्त करता है।[44] क्रौञ्चद्वीप में भगवान् शङ्कर ने बालचन्द्र को मस्तक पर धारण किया होता है।[45]

शाकद्वीप

शाकद्वीप के राजा का नाम हव्य है।[46] शाकद्वीप के मध्यभाग में शाक नामक एक महान् वनस्पति है।[47] यह शाकवृक्ष सिद्धों और गन्धर्वों से सेवित है इसके पत्तों से उत्पन्न पवन के स्पर्श से एक अपूर्व आनन्द की प्राप्ति होती है।[48] ऐसा कहा जाता है कि शाकद्वीप में मग, मागध, मानस और मन्दग ये चार वर्ण निवास करते हैं। इनमें ब्राह्मण को मग, क्षत्रिय को मागध, वैश्य को मानस और शूद्र को मन्दग कहा जाता है।[49] शाकद्वीप के लोग सूर्यरूपधारी भगवान् विष्णु का यजन करते हैं।[50] ब्रह्म पुराण में भी उल्लेख किया गया है कि शाकद्वीप में सूर्यरूपधारी भगवान् विष्णु रहते हैं।[51] शाकद्वीप अपने ही समान विस्तार वाले क्षीरसमुद्र से घिरा हुआ है। क्षीरसमुद्र पुष्कर द्वीप से भी घिरा हुआ है।[52] नैषधचरित में श्रीहर्ष वर्णन करते हैं कि शाकद्वीप का शासन करने वाले राजा का नाम हव्य ह।[53] वहाँ तोते के पंख के समान कान्ति वाले पत्तों को धारण करने वाला 'शाक' नामक वृक्ष है। इस विशाल 'शाक' वृक्ष के पत्तों से हरि हो जाने के कारण दिशाओं का नाम 'हरित' प्रसिद्ध हो गया है। शाकद्वीप में शाकवृक्ष के पत्तों से उत्पन्न वायु किसी अनिर्वचनीय हर्ष को पैदा करती है अर्थात् इस वृक्ष का वायु अत्यन्त आनन्दप्रद है। विष्णु पुराण में पराशर ने समस्त भूगोल के वर्णन–प्रसङ्ग में शाकद्वीप के पत्तों के आह्लादकारक होने का वर्णन किया है।[54] श्रीहर्ष आगे उल्लेख करते हैं कि शाकद्वीप में क्षीरसमुद्र है। समुद्र के तट पर वन ह, जिनकी प्रतिच्छाया जल में पड़ने से लहरें नानावर्ण की हो जाती हैं। क्षीरसमुद्र की वे लहरें चपल तो हैं ही साथ में मनोहारिणी भी लगती हैं। क्षीरसमुद्र में दुग्ध का पान करके मोटे हुए सर्पराज शेषनाग के मंडलाकार विशाल शरीर पर मधुनाशक श्रीविष्णु भगवान् स्थित रहते हैं।[55]

पुष्करद्वीप

पुष्कर द्वीप के राजा का नाम सवन बतलाया गया है।[56] पुष्करद्वीप में कमल के समान बरगद का वृक्ष है, इसी कारण उसे पुष्करद्वीप कहते हैं।[57] पुष्करद्वीप के मनुष्य और देवगण समान वेष और समान रूप वाले होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि पुष्करद्वीप के वट वृक्ष पर ब्रह्मा जी निवास करते हैं। सभी देवता और दानव यहाँ ब्रह्मा जी की पूजा करते हैं।[58] पुष्करद्वीप चारों ओर से अपने ही समान विस्तार वाले मीठे जल के समुद्र से मण्डलाकार घिरा हुआ है।[59] श्रीहर्ष वर्णन करते हैं कि पुष्करद्वीप के राजा का नाम 'सवन' है। पुष्करद्वीप में स्वादिष्ट जलवाला समुद्र है।[60] महाकवि ने पुष्कराधिपति सवनराज की धरती को ही स्वर्ग कहा है, इसका राज्य ही स्वर्गराज्य है, यही इन्द्र है इसलिए कवि ने दमयन्ती को इस राजा की इन्द्राणी बनने का आग्रह किया है।[61] पुष्करद्वीप में एक वटवृक्ष है। बर्फ के समान शीतल

उस वटवृक्ष के नीचे साक्षात ब्रह्मदेव रहते हैं। श्रीहर्ष आगे वर्णन करते हैं कि वह वटवृक्ष पके हुए फलों एवं अत्यन्त श्यामवर्ण वाले पत्तों से इतना सघन है कि उसके नीचे धूप या वर्षा आदि नहीं आती। अतएव उसका न्यग्रोध (नीचे स्थित होकर धूप आदि को रोकने वाला) नाम सार्थक है। इसलिए उस वटवृक्ष को पुष्करद्वीप का धूप से बचाने वाला छाता कहना उचित ही है।[62]

सन्दर्भ

1 रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, तृतीय खण्ड, पृ0, 142

2 विक्रीय दिश्यानि धनान्युरूणि द्वैप्यानसावुत्तमलाभभाजः।
तरीषु तत्रत्यमफल्गुभाण्डं सांयात्रिकानावपतोऽभ्यनन्दत्।। शिशुपालवध, 3.76

3 द्वीपभदसहòाणि सप्त चान्तर्गतानि च।
न शक्यन्ते क्रमेणेह वक्तुं वै सकलं जगत्।। मत्स्य पुराण, 113.4

4 रुधिरस्य परीवाहैः पूरयित्वा सरांसि च।
सर्वानष्टादश द्वीपान् वशमानीय भार्गवः।। महाभारत, 7.70.15

5 अमुष्य ..... नवद्वयद्वीपपृथग्जयश्रियाम्।। नैषधचरित, 1.5

6 भवद्वियोगा .....द्वीप.....अयम्।। वही, 3.113
किं नर्मदाया ..... अन्तरीपे ..... बाल्यवारः।। वही, 7.73
इतीयम् ..... अन्तरीपिणी ..... सारणी।। वही, 9.155
द्वीपान्तरेभ्यः .... तूललीला।। वही, 10.26
पुष्पेषुणा ..... द्वीपाधिपान् ..... त्वम्।। वही, 11.26

7 कश्यपाय ददौ रामो हयमेधे महामखे।
सप्तद्वीपां वसुवतीं मारीचोऽगृहणत द्विजः।।
रामं प्रोवाच निर्गच्छ वसुधातो ममाज्ञया।। महाभारत, 7.70.19,21

8 सप्त द्वीपा तथा पृथ्वी नदोपर्वतसंकुला।
समुद्रैः सप्तभिश्चैव सर्वतः समलंकृता।। लिंग पुराण, 1.34.1

9 सप्तद्वीप वसुन्धरां। कादम्बरी, पृ0, 179

10 जम्बू–प्लक्षाह्वयौ द्वीपौ शाल्मलश्चापरो द्विज।
कुशः क्रौञ्चस्तथा शाकः पुष्करश्चैव सप्तमः।।
एते द्वीपाः समुद्रैस्तु सप्त सप्तभिरावृताः।।
लवणेक्षु–सुरा–सर्पिर्दधि–दुग्ध–जलैः समम्।। विष्णु पुराण, 2.2.5–6

11 कर्दमस्यात्मजां कन्यामुपयेमे प्रियव्रतः।
सम्राट कुक्षिश्च तत्कन्ये दश पुत्रास्तथाऽपरे।। वही, 2.1.5

12 आग्नीध्रोमेधातिथिश्चवपुष्पांश्चतथापरः।
ज्योतिष्मान्द्युतिमान्भव्यः सवनः सप्तएवते।
मेधाग्निबाहुमित्रास्तु त्रयोयोगपरायणाः।
प्रियव्रतोऽभ्यषिंचत्तान्सप्तसुपार्थिवान्।
द्विपेषुपेन धर्मेण .....।। मार्कण्डेय पुराण, 1.45.15–16

13 यन्मौलिरत्नमुदिताऽसि स एष जम्बूद्वीपस्त्वदर्थमिलितैर्युवभिर्विभाति।
दोलायितेन बहुना भवभीतिकम्प्रः कन्दर्पलोक इव खात्पतितस्त्रुटित्वा।। नैषधचरित, 11.83

14 जम्बूद्वीपेश्वरं चक्रे आग्नीध्रं सुमहाबलम्। लिंग पुराण, 1.34.19

15 लक्षयोजनविस्तारं जम्बूद्वीपं समावृतम्।
लक्षयोजनमानेन क्षारोदेन समन्ततः।। अग्नि पुराण, 1.51.1

16 जम्बूद्वीपः समस्तानाम् एतेषां मध्यसंस्थितः।
तस्यापि मेरुर्मैत्रेय मध्ये कनकपर्वतः।।

जम्बूद्वीपस्य सा जम्बूर्नामहेतुर्महामुने।
महागजप्रमाणानि जम्ब्वास्तस्याः फलानि वै।।
पतन्ति भूमृतः पृष्ठे शीर्य्यमाणानि सर्वतः।
रसेन तेषां प्रख्याता तत्र जम्बूनदीति वै।। विष्णु पुराण, 2.2.7,20

17 विष्वग्वृतः .....।
हेमाद्रिणा कनकदण्डमयातपत्रः कैलासरश्मिचयचामरचक्रचिह्नः।।
एतत्तरुस्तरुणि! राजति राजजम्बूः स्थूलोपलानिव फलानि विमृष्य यस्याः।
जाम्बूनदं जगति विश्रुतिमेति मृत्स्नाकृत्स्नाऽपि सा तव रुचा विजितश्रि यस्याः।
तज्जाम्बवद्रवभवाऽस्य सुधाविधाम्बुर्जम्बूः सरिद्वहति सीमनि कम्बुकण्ठि! नैषधचरित, 11.84–86

18 प्लक्षद्वीपेश्वरश्चापि तेन मेधातिथिः कृतः।। लिंग पुराण, 1.34.19

19 अनुतप्ता शिखी चैव विपाशा त्रिदिवाक्लमा।
अमृता सुकृता चैव सप्तैतास्तत्र निम्नगाः।। विष्णु पुराण, 2.4.11

20 आर्यकाः कुरराश्चैव विदिश्या भाविनश्च ये।
विप्र–क्षत्रिय–वैश्यास्ते शूद्राश्च मुनिसत्तम।। वही, 2.2.17

21 विप्राद्यास्तेश्च सोमोऽर्य्यो द्विलक्षश्चैव प्लक्षकः।।
मानेनेक्षुरसोदने वृतो .....। अग्नि पुराण, 1.51.6–7

22 जम्बूवृक्षप्रमाणस्तु तन्मध्ये सुमहांस्तरुः।
प्लक्षस्तन्नामसंज्ञोऽयं प्लक्षद्वीपो द्विजोत्तम।। विष्णु पुराण, 2.4.18

23 द्वीपं द्विपाधिपतिमन्दमपदे! प्रशास्ति प्लक्षोपलक्षितमयं क्षितिपस्तदस्य।
मेधातिथेः ..... यमलार्जुनारेः।।
प्लक्षे महीयसि महीवलयातपत्रे तत्रेक्षिते खलु तवापि मतिर्भवित्री।
खेलां विधातुमधिशाखविलम्बिदोलालोलाखिलाङ्गजनताजनितानुरागे।।
पीत्वा ..... रसमिक्षुरसोदवाराम्।
द्वीपस्य तस्य ..... चलाचलाक्षि।।
सूरं न सौर इव नेन्दुमवेक्ष्य तस्मिन् अश्नाति यस्तदितरत्रिदशानभिज्ञः।
तस्यैन्दवेस्य भवदास्यनिरीक्षयैव दर्शेऽश्नतोऽपि न भवत्यवकीर्णिभावः।।
उत्सर्पिणी न किल तस्य तरङ्गिणी या त्वन्नेत्रयोरहह!! तत्र विपाशि जाता।
नीराजनाय नवनीरजराजिरास्तामत्राऽजसाऽनुरज राजनि राजमाने।। नैषधचरित, 11.73–77

24 शाल्मलेश्च वपुष्मतं राजानमभिषिक्तवान्। लिंग पुराण, 1.34.20

25 कुमुदश्चानलश्चैव तृतीयस्तु बलाहकः।।
द्रोणः कङ्कोऽथ महिषः कुकुद्मान् .....। अग्नि पुराण, 1.51.9–10

26 देवानामत्र सान्निध्यमतीव सुमनोहरे।
शाल्मलिः सुमहान्वृक्षो नाम्ना निर्वृतिकारकः।। विष्णु पुराण, 2.4.32

27 ..... सुरोदेनामावृतः। अग्नि पुराण, 1.51.11

28 द्वीपस्य शाल्मल इति प्रथितस्य नाथः
पाथोधिना वलयितस्य सुराम्बुनाऽयम्।
अस्मिन् वपुष्मति न विस्मयसे गुणाब्धौ
रक्ता तिलप्रसवनासिकि! नासि किं वा?।। नैषधचरित, 11.67

29 द्रोणः स तत्र वितरिष्यति भाग्यलभ्यसौभाग्यकार्मणमयीमुपदां गिरिस्ते।
तद्द्वीपदीप इव दीप्तिभिराषधीनां चूडामिलज्जलदकज्जलदर्शनीयः।। वही, 11.69

30 तद्द्वीपलक्ष्मपृथुशाल्मलितूलजालैः क्षोणीतले मृदुनि मारुतचारुकीर्णैः।
लीलाविहारसमये चरणार्पणानि योग्यानि ते सरससारसकोषमृद्वि!।। वही, 11.70

31 ज्योतिष्मतं कुशद्वीपे राजानं कृत्वान्नृपः। लिंग पुराण, 1.34.20

32 विद्रुमो हेमशैलश्च द्युतिमांपुष्पवांस्तथा।
कुशेशयो हरिश्चैव सप्तमो मन्दराचलः।। गरुड़ पुराण, 1.28.9

33 अन्याः .....।

कुशद्वीपे कुशस्तम्बः संज्ञया तस्य तत् स्मृतम्।। विष्णु पुराण, 2.4.44

34 वेष्टितोऽयं घृतोतेन क्रौञ्चद्वीपेन सोऽप्यथ। अग्नि पुराण, 1.51.14

35 ईशः कुशेशयसनाभिशये! कुशेन द्वीपस्य लाञ्छिततनोर्यदि वाञ्छितस्ते।
ज्योतिष्मता सममनेन वनीघनासु तत् त्वं विनोदय घृतोदतटीषु चेतः।। नैषधचरित, 11.58

36 वातोर्मिलोलनचलद्दलमण्डलाग्रभिन्नाभ्रमण्डलगलज्जलजातसेकः।
स्तम्बः कुशस्य भविताऽम्बरचुम्बिचूडश्चित्राय तत्र तव नेत्रनिपीयमानः।। वही, 11.59

37 पाथोधिमन्थसमयोत्थितसिन्धुपुत्रीपत्पङ्कजार्पणपवित्रशिलासु तत्र।
पत्या सहाऽऽवह विहारमयैर्विलासैरानन्दमिन्दुमुखि! मन्दरकन्दरासु।। वही, 11.60

38 द्युतिमतं च राजानं क्रौंचद्वीपे समादिशत्। लिंग पुराण, 1.34.21

39 क्रौञ्चश्च वामनश्चैव तृतीयश्चान्धकारकः।
देवावृच्च महाशैलो दुन्दुभिः पुंडरीकवान्।। गरुड़ पुराण, 1.28.12

40 पुष्कराः पुष्कला धन्यास्तिष्याख्याश्च महामुने।
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चानुक्रमोदिताः।। विष्णु पुराण, 2.4.53

41 पुष्कराः पुष्कला धन्यास्तिथ्यां विप्रादया हरिम्।।
यजन्ति क्रौञ्चद्वीपस्तु दधिमण्डोदकावृतः।
संवृतः शाकद्वीपेन भव्याच्छाकेश्वराः सुत्सः।। अग्नि पुराण, 1.51.17–18

42 द्वीपस्य पश्य दयितं द्युतिमन्तमेतं क्रौञ्चस्य चञ्चलदृगञ्चलविभ्रमेण।
यन्मण्डले स किल पाण्डुलसन्निवेशः पूरश्चकास्ति दधिमण्डलमयः पयोधेः।। नैषधचरित, 11.49

43 तत्राद्रिरस्ति भवदङ्घ्रिविहारयाची क्रौञ्चः स्फुरयिष्यति गुणानिवयस्त्वदीयान्।
हंसावलीकलकलप्रतिनादवाग्निभः स्कन्धेषुवृन्दविवरैर्विवरीतुकामः।। वही, 11.50

44 वैदर्भि! दर्भदलपूजनयाऽपि यस्य गर्भे जनः पुनरुदेति न जातु मातुः।
तस्यार्चनां रचय तत्र मृगाङ्कमौलेस्तन्मात्रदैवतजनाभिजनः स देशः।। वही, 11.51

45 चूडाग्र ..... स्तन्धयसुधाकरशेखरस्य।
..... हेमघटावतंसा।। वही, 11.52

46 शाकद्वीपेश्वरं चापि हव्यं चक्रे प्रियव्रतः। लिंग पुराण, 1.34.21

47 द्वोपस्य ..... तस्य मध्ये वनस्पतिम्।।
शाको नाम महावृक्षः ..... चारणैः।। मत्स्य पुराण, 122.26–27

48 शाकश्चात्र महावृक्षः सिद्धगन्धर्वसेवितः।
यत्पत्रवातसंपर्शादाह्लादो जायते परः।। ब्रह्म पुराण, 20.64

49 मगाश्च मागधाश्चैव मानसा मन्दागास्तथा।
मगा ब्राह्मणभूयिष्ठा मागधाः क्षत्रियास्तथा।
वैश्यास्तु मानसास्तेषां शूद्रास्तेषां तु मन्दगाः।। विष्णु पुराण, 2.4.69

50 यजन्ति सूर्यरूपं तु शाकः क्षीराब्दिनाऽऽवृतः।
पुष्करेणाऽऽवृतः .....। अग्नि पुराण, 1.51.21–22

51 शाकद्वीपे स्थितैर्विष्णुः सूर्यरूपधरो हरिः। ब्रह्म पराण, 20.72

52 शाकद्वीपस्तु मैत्रेय क्षीरोदेन समावृतः।
शाकद्वीपप्रमाणेन वलयेनेव वेष्टितः।।
क्षीराब्धिः सर्वतो ब्रह्मन्पुष्कराख्येन वेष्टितः।
द्वीपेन शाकद्वीपात्तु द्विगुणेन समन्ततः।। विष्णु पुराण, 2.4.71–72

53 नन्वत्र हव्य इति विश्रुतनाम्नि शाकद्वीप्रशासिनि सुधीषु सुधीभवन्त्याः?।
..... अन्तरम् ते?।। नैषधचरित, 11.37

54 शाकः शुकच्छदसमच्छविपत्रमालभारी हरिष्यति तरुस्तव तत्र चित्तम्।
यत्पल्लवौघपरिरम्भविजृम्भितेन ख्याता जगत्सु हरितो हरितः स्फुरन्ति।।
स्पर्शेन तत्र किल तत्तरुपत्रजन्मा यन्मारुतः कमपि सम्मदमाददाति!
कौतूहलं तदनुभूय विधेहि भूयः श्रद्धां पराशरपुराणकथान्तरेऽपि।। वही, 11.38–39

55 क्षीरार्णवस्तव कटाक्षरुचिच्छटानामध्येतु तत्र विकटायितमायताक्षि!।

वेलावनीवनततिप्रतिबिम्बचुम्बिकिर्मीरितोर्मिचयचारिमचापलाभ्याम्।।
कल्लोलजालचलनोपनतेन पीवा जीवातुनाऽनवरतेन पयोरसेन।
अस्मिन्नखण्डपरिमण्डलितोरुमूर्तिरध्यास्यते मधुभिदा भुजगाधिराजः।। वही, 11.40–41

56 पुष्कराधिपति चक्रे सवनं चापि सुव्रताः। लिंग पुराण, 1.34.22

57 न्यग्रोधः पुष्करद्वीपे पद्मवत् तेन स स्मृतः।
..... सम्भवः।। मत्स्य पुराण, 123.39

58 तुल्यवेषास्तु मनुजा देवास्तत्रैकरूपिणः।
.....वर्जितम्।।
न्यग्रोधः पुष्करद्वीपे ब्रह्मणः स्थानपमुत्तमम्।
तस्मिन्निवसति ब्रह्मा पूज्यमानः सुरासुरैः।। विष्णु पुराण, 2.4.82,85

59 स्वादूदकेनोदधिना पुष्करः परिवेष्टितः।
समेन पुष्करस्यैव विस्तारान्मण्डलं तथा।। वही, 2.4.86

60 स्वादूदके जलनिधौ सवनेन सार्द्ध भव्या भवन्तु तव वारिविहारलीलाः।
द्वीपस्य तं पतिममुं भज पुष्कररस्य निस्तन्द्रपुष्करतिरस्करणक्षमाक्षि।। नैषधचरित, 11.27

61 सावर्त्तभावभवदद्भुतनाभिकूपे! स्वर्भौममेतदुपवर्त्तनमात्मनैव।
स्वाराज्यमर्जयसि न श्रियमेतदीयाम्। एतद्गृहे परिगृहाणशचीविलासम्।। वही, 11.28

62 देवः स्वयं वसति तत्र किल स्वयम्भून्यग्रोधमण्डलतले हिमशीतले यः।
..... दर्पम्।।
न्यग्रोधनादिव दिवः पतदातपादेर्न्यग्राधमात्मभरधारमिवावरोहैः।
तं तस्य पाकिफलनीलदलद्युतिभ्यां द्वीपस्य पश्य शिखिपत्रजमातपत्रम्।। वही, 11.29–30

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

अग्नि पुराण, सम्पादक : पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक : संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब (वेदनगर), बरेली (उ0प्र0)

गरुड़ पुराण, सम्पादक : पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक : संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब (वेदनगर), बरेली–243001 (उ0प्र0)

नैषधचरित (पूर्वार्द्ध तथा उतरार्द्ध), लेखक : श्रीहर्ष, टीकाकार : मल्लिनाथ, व्याख्याकार : डॉ0 देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, प्रकाशक : कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, तृतीय संस्करण, वि0सं0, 2067

ब्रह्म पुराण, सम्पादक : पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक : संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब (वेद नगर), बरेली (उ0प्र0), प्रथम संस्करण, 1971

मत्स्य पुराण, प्रणेता : वेदव्यास, प्रकाशक : गीताप्रेस, गोरखपुर–273005, वि0सं0, 2067

महाभारत, प्रणेता : वेदव्यास, अनुवादक : पं0 रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय, प्रकाशक : गीताप्रेस, गोरखपुर – 273005, संस्करण, वि0सं0, 2067

मानक हिन्दी कोश, सम्पादक : रामचन्द्र वर्मा, सहायक सम्पादक : बदरीनाथ कपूर, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण, 1966

मार्कण्डेय पुराण, सम्पादक : पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक : संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब (वेद नगर), बरेली (उ0प्र0), 1971

लिंग पुराण, सम्पादक : पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक : संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब (वेदनगर), बरेली (उ0प्र0), द्वितीय संस्करण, 1971

विष्णु पुराण, अनुवादक : श्रीमुनिलाल गुप्त, प्रकाशक : गीताप्रेस, गोरखपुर–273005, वि0सं0, 2068

शिशुपालवध, लेखक : माघ, टीकाकार : मल्लिनाथ, व्याख्याकार : पं0 हरगोविन्द शास्त्री, प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, पो0बॉ0नं0 1069, वाराणसी–221001, संस्करण, 2010